Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2020, VOL- 7/58

उच्च शिक्षा में अनुदेशन माध्यम : समस्या एवं समाधान

रुषाली गुप्ता[1] & डॉ छाया सोनी[2]

[1]***शोधछात्रा,*** *शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय*

[2]***सहायक अध्यापिका,*** *शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय*

Abstract

अनुदेशन माध्यम अर्थात पढ़ने–पढ़ाने का माध्यम किसी भी शिक्षा व्यवस्था का सबसे अहम हिस्सा होता है। अनुदेशन माध्यम ही विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को सरल या कठिन बनाता है। सामान्यतः विद्यार्थी प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक अपने–अपने क्षेत्रीय वातावरण में रहकर अपनी मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त करते है, परंतु जब वही विद्यार्थी विद्यालयी वातावरण से उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए उच्च शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों आदि में प्रवेश करते हैं तब वहां उनका एक नए वातावरण से साक्षात्कार होता है। साहित्यिक सर्वेक्षण व शोधार्थी द्वारा उच्च शिक्षा (स्नातक) ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों से लिए गए साक्षात्कार के माध्यम से यह पता चला कि शिक्षक द्वारा प्रयुक्त अनुदेशन माध्यम (अंग्रेजी) समझ नहीं आने के कारण विद्यार्थियों को कई प्रकार के शैक्षणिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक समस्याओं जैसे संप्रत्यय समझने में समस्या, विषय के प्रति रुचि कम होना, आत्मविश्वास की कमी, अनुत्तीर्ण होने का भय, पक्षपात की समस्या, सीखने संबंधी समस्या, नोट्स की समस्या, सहपाठियों का खराब व्यवहार, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अधिक समस्या, ड्रॉपआउट आदि। यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि प्रस्तुत लेख इस ओर इंगित नहीं करना चाहता है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं में समस्त शिक्षण कार्य अंग्रेजी माध्यम में न होकर हिंदी में हो बल्कि यह बताना चाहता है कि शिक्षक जिस भी भाषा में शिक्षण कार्य करें वह विद्यार्थियों की मांग या अपेक्षाओं पर खरा उतरे। शिक्षक इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि वह समस्त शिक्षण कार्य निरर्थक हो जाएगा, यदि वह ज्ञान विद्यार्थी तक नहीं पहुंच पाए। इसलिए अनुदेशन माध्यम एक गंभीर और महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिस पर विचार करना अति आवश्यक है।

किसी भी देश, समाज या व्यक्ति के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। शिक्षा न केवल मानवीय मूल्यों, संस्कृतियों और संवेदना को अग्रसरित करती है, बल्कि किसी भी देश समाज और व्यक्ति की गति–मति ओर विकास की दिशा भी तय करती है। डॉ० भीमराव अंबेडकर का भी दृढ़ विश्वास था कि बेहतर शिक्षा के बल पर ही हम देश की तकदीर बदल सकते हैं। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के बाद 'उच्च शिक्षा' शिक्षा का तृतीय स्तर होता है। इसके अंतर्गत स्नातक, परास्नातक, व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं। भारत का उच्च शिक्षा तंत्र अमेरिका और चीन के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च शिक्षा तंत्र है। वर्तमान में सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अंतर्गत संपूर्ण देश में ४६ केंद्रीय व ३६७ राज्य विश्वविद्यालयों का निर्माण किया गया। विद्यालयी शिक्षा प्राप्ति के उपरांत उच्च शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन को एक नयी दिशा देने की पहली सीढ़ी होती है, जहाँ विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व में गुणात्मक विकास कर अपने लिए एक अच्छे भविष्य और समाज का निर्माण कर सकते हैं। फिडलेन्डर और अन्य विद्वान (२००७) ने बताया कि विश्वविद्यालय का प्रथम वर्ष विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारत में स्थापित उच्च शिक्षण संस्थाओं के विषय में विचार करे तो, जहां प्राचीन काल में तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय जैसी विश्व प्रसिद्ध उच्च शिक्षण संस्थाएं भारत की प्रतिष्ठा समस्त विश्व में स्थापित कर रही थी वर्तमान में टाइम हायर एजुकेशन की ग्लोबल यूनिवर्सिटी रैंकिंग की ओर से निकाली गयी २०१६ के टॉप ३०० विश्वविद्यालयों की सूची में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय को स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। इस सूची का निर्माण शोध के वातावरण, शोध पत्र का वैश्विक स्तर पर उद्धृत किया जाना, शैक्षणिक वातावरण और उसकी गुणवत्ता, पेटेंट आदि पैमानों पर किया गया था।(नवभारत टाइम्स, २०१६) आखिर क्या कारण है कि विश्व का सबसे युवा देश उच्च शिक्षण संस्थाओं की गुणवत्ता के आधार पर अपने को चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी आदि विकसित देशों की भांति स्थापित नहीं कर पा रहा है। यदि हम भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करें तो उपर्युक्त स्थिति के लिए कई कारण जिम्मेदार हो सकते हैंय जैसे व्यवसायिक व तकनीकी रूप से दक्ष अध्यापकों की कमी, अध्यापकों के चयन में भ्रष्टाचार, नीति व नियमों को बनाने में राजनेताओं का हस्तक्षेप, नीतियों का सही ढंग व समय पर लागू ना होना, अनुदेशन माध्यम का चुनाव आदि।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भाषा की महत्ता - अनुदेशन माध्यम को जानने से पहले हमें भाषा को समझना आवश्यक है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम माना जाता है। साथ ही भाषा हमारे अभ्यांतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। वह हमारे अस्तित्व, सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान, विकास का भी साधन है। मनुष्य को जीवन जीने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है, चाहे वह भाषा चित्रात्मक हो, सांकेतिक हो या शाब्दिक। मनुष्य को एक सामान्य जीवन जीने के लिए जैसे भोजन, वायु और जल की आवश्यकता हाती है वैसे ही भाषा की भी। वस्तुतः भाषा और व्यक्ति एक–दूसरे के पूरक हैं।

भारत में भाषा - भारत दुनिया के उन अनूठे देशों में से एक है, जहां भाषाओं में विविधता की विरासत है। भारत में करीब ७८० भाषाओं का अस्तित्व है और ८३६ भाषाओं वाले पापुआ न्यूगिनी के बाद यह दुनिया में सबसे अधिक भाषाओं के वजूद वाला देश है। भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैंय परंतु यहाँ एक भी ऐसी भाषा नहीं जो पूरे देश में बहुमत से बोली जाती हो जैसे – उत्तर भारत में हिन्दी बहुतायत में बोली जाती, वहीं दक्षिण भारत में बहुत कम। इसी तरह दक्षिण भारतीय भाषाओ जैसेः तमिल, तेलुगू,

मलयालम आदि का बोलचाल के रूप में प्रयोग उत्तर भारत में नाममात्र का होता है। २८ राज्यों ९ केंद्र शासित प्रदेशो वाले भारत में कोई एक मातृभाषा ना होकर कई मातृभाषाएं हैं, जिसमें विद्यार्थी अपनी शिक्षा ग्रहण करते है।

शिक्षा में भाषा का महत्व - भाषा ही वह साधन है, जिसकी सहायता से समस्त शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य (पढ़ाना, लिखाना, समझाना, बोलना, सुनाना आदि) सफलतापूर्वक कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा किया जाने वाला समस्त अध्ययन कार्य जैसे पढ़ना, लिखना, समझना, बोलना, सुनना आदि भाषा पर ही आधारित होता है। शिक्षक भाषा के माध्यम से ही विषय वस्तु का ज्ञान विद्यार्थियों तक स्थानांतरित कर पाते हैं, और विद्यार्थी भी उस भाषा ज्ञान के कारण ही उस ज्ञान को अर्जित कर पाते हैं । इस प्रकार भाषा ही वह आधार स्तंभ हैय जिस पर समस्त शिक्षण कार्य टिका हुआ है। शिक्षक द्वारा प्रयुक्त अनुदेशन माध्यम का कार्य भी भाषा के बिना संभव नहीं है। अनुदेशन माध्यम अर्थात शिक्षा का माध्यम। शिक्षक,कक्षा में अपने विषय को पढ़ाने व अपने ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए एक माध्यम का चुनाव करता है और एक शिक्षक के लिए माध्यम के रूप में सबसे सशक्त हथियार 'भाषा' होता है। भाषा के द्वारा ही सभी शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य करते है। अतः समस्त शिक्षण कार्य के लिए शिक्षक जिस भाषा का चुनाव करते है ,वही अनुदेशन माध्यम कहलाता है। भारत में शिक्षक के लिए अनुदेशन माध्यम का चुनाव करना एक कठिन कार्य है, क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जहां क्षेत्र, कस्बा, गांव, राज्य, आदि के आधार पर शिक्षक द्वारा प्रयुक्त अनुदेशन माध्यम में परिवर्तन होता जाता है।

उच्च शिक्षा में अनुदेशन माध्यम अर्थात पढ़ने–पढ़ाने का माध्यम किसी भी शिक्षा व्यवस्था का सबसे अहम हिस्सा होता है। अनुदेशन माध्यम ही विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को सरल या कठिन बनाता है। सामान्यतः विद्यार्थी प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक अपने–अपने क्षेत्रीय वातावरण में रहकर अपनी मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त करते है, परंतु जब वही विद्यार्थी विद्यालयी वातावरण से विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रवेश करते हैंय तब वहां उनका एक नए वातावरण से साक्षात्कार होता है। जहां भिन्न–भिन्न देशों, राज्यों, जनपदों,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

गांवों, कस्बों आदि क्षेत्रों के ग्रामीण या शहरी भागों से विद्यार्थी एक ही कक्षीय वातावरण में बैठकर ज्ञान अर्जित करते हैं। जहाँ सभी विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी आदि पृष्ठभूमि अलग–अलग होती है। इस विविधतापूर्ण कक्षा में शिक्षक द्वारा यह निर्णय करना कि वह शिक्षण कार्य के लिए किस भाषा का प्रयोग करें, जिससे कक्षा में उपस्थित सभी विद्यार्थी सहजता से संप्रत्यय को समझ पाये। मुधोवोजि (२०१२) ने अध्ययन में बताया कि दक्षिण अफ्रीका के विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सामाजिक व शैक्षणिक रूप से कई चुनौतिया का सामना करना पड़ता है। जैसे - लंबे समय तक कक्षाओं का चलना, शिक्षक द्वारा भिन्न–भिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग, अनुदेशन माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग, बड़े–बड़े पैमाने पर प्रतिस्पर्धा, अधिक कार्य का दबाव, लिखित कार्यों का विस्तार क्षेत्र आदि। सभी विद्यार्थियों के लिए यह एक नया अनुभव होता है, जहां उन्हें अपने विषय में विद्वान शिक्षकों, नयी शिक्षण पद्धति में अनुदेशन माध्यम से अवगत होना होता है।

अनुदेशन माध्यम का चुनाव कृ वास्तव में सही शिक्षा वही मानी जा सकती हैं, जो समझ का विकास करें और समझ के लिए भाषा को समझना सबसे महत्वपूर्ण है। भारत के सुविख्यात महाकवि कालिदास ने भी अपनी कालजयी काव्य कृति रघुवंशम् का आरंभ ही भगवान शिव और माता पार्वती से उन्हें शब्द और उनके अर्थ समझने की शक्ति प्रदान करने के निवेदन से जुड़ी स्तुति के साथ किया है–

वागर्थविवा संप्रक्तौ, वागर्थ प्रति पत्तेये
जगतः पितरौ वंदे, पार्वती परमेश्वरौ (नायडू,एम०वी०,२०१७)

भारत में लोगों का अनुदेशन माध्यम के प्रति मत एक समान नहीं है। सामान्यतः लोगों की यह मान्यता है कि कक्षा शिक्षण में शिक्षक द्वारा द्वितीय भाषा या कोई ऐसी भाषा जिस भाषा को विद्यार्थी ठीक ढंग से पढ़, लिख व समझ नहीं सकते उसमें अनुदेशन कार्य करना विद्यार्थी के आंतरिक सामर्थ्य को दबाता है ।४ फरवरी १९१६ को काशी हिंदू विश्वविद्यालय के रजत महोत्सव के अवसर पर गांधी जी द्वारा दिए गए भाषण में उन्होंने

कहा था कि 'मुझे इस पवित्र नगर में इस महान विद्यापीठ के आंगन में अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है। मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबंध किया जाएगा। हमारी भाषा हमारे हृदय का प्रतिबिंब है। यदि हम अपनी भाषाओं द्वारा अपने विचार प्रकट नहीं कर सकते तो इस संसार से हमारा अस्तित्व ही मिट जाए तो अच्छा होगा।(दैनिक जागरण सप्तरंग, २ अक्टूबर) २१ फरवरी २०१७ को दिए गए अपने संदेश में यूनेस्को के महानिदेशक ने पढ़ने–पढ़ाने के माध्यम के रूप में मातृभाषा के महत्व को स्पष्ट रूप से इन शब्दों में रेखांकित किया था "अध्ययन, आत्मसम्मान और स्वाभिमान का स्तर सुधारने में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना बेहद आवश्यक है जो विकास के सबसे प्रमुख पहलू में शुमार है। "(वेंकैया नायडू, १८ अक्टूबर २०१७)

अध्ययन यह दशा रहे हैं कि अगर बच्चों को पढ़ाने के लिए अनुदेशन माध्यम के रूप में मातृभाषा का चुनाव किया जाए, तो सबसे बेहतर नतीजे हासिल होते हैं। जापान, ब्रिटेन, चीन, फ्रांस आदि तमाम देशों में न केवल स्कूली बल्कि उच्च शिक्षा भी मातृभाषा में दी जाती है। विश्व के समृद्ध देशों के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में शिक्षक व विद्यार्थी क्रमशः समस्त शिक्षण व अध्ययन कार्य के लिए अपनी भाषाओं का प्रयोग कर रहे हैं और निज भाषा को ही अपनी उन्नति का मूल मंत्र बना रहे हैं। हर एक विकसित देश अपनी भाषा के आधार पर आगे बढ़ रहा है। कोई भी विकसित देश अपनी भाषाओं को छोड़कर किसी गैर भाषा के प्रयोग से विकसित नहीं हुआ है। हर विकसित देश तकनीक, विज्ञान, शिक्षा और व्यवसाय में जन भाषा का प्रयोग कर रहा है। अपनी ही भाषा के आधार पर इस देश में नौकरियां भी मिलती हैं, और उच्च कोटि का शोध भी होता है। रविंद्रनाथ टैगोर ने भी मातृभाषा की महत्ता को स्थापित करते हुए कहा था कि "एक वैश्या संसार की सारी दौलत पाकर भी इज्जतदार नहीं बन सकती। तुम परायी भाषा में चाहे जिंदगी भर लिखते

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

रहो लेकिन न तुम्हारे अपने लोग तुम्हें अपना समझेंगे ना वे लोग जिनकी भाषा में तुम लिख रहे हो। दूसरों का बनने से पहले तुम्हें अपने लोगों का बनना चाहिए।

उपर्युक्त कथन इस ओर इंगित कर रहा है, कि शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा ही होनी चाहिए। परंतु भारत जैसे बहुभाषिकता वाले देश में कोई एक मातृभाषा ना होकर कई मातृभाषा है। जैसे– उत्तर भारत में हिंदी है तो वहीं पश्चिम में मराठी, दक्षिण में तमिल, तेलुगू, मलयालम, पूर्वोत्तर भारत में असमिया, अंग्रेजी आदि देखने में मिलते हैं। ऐसे में शिक्षक के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है कि वह उच्च शिक्षण संस्थाओं की कक्षा में अनुदेशन माध्यम के रूप में किस भाषा का चुनाव करें।

२१ वी० शताब्दी के दौरान अंग्रेजी भाषा दुनिया में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा बन गई है। इसे एक सार्वभौमिक भाषा माना जाता है। दुनिया भर के मुख्यतः सभी विश्वविद्यालयों में 'अंग्रेजी' शिक्षा की भाषा के रूप में प्रयोग की जा रही है। भारत के समस्त उच्च कोटि की संस्थाओं जैसे– आई०आई०टी०, आई०आई०एम० आदि में अनुदेशन माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। उत्तर भारत की बात करें तो उत्तर प्रदेश सरकार ने ५००० अंग्रेजी माध्यम के सरकारी स्कूल चलाने का फैसला किया है। तर्क यह है कि अभिभावक ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की मांग कर रहे हैं और यही कारण है कि अब हिंदी माध्यम के स्कूलों को अंग्रेजी में बदला जा रहा है। अंग्रेजी माध्यम स्कूल होने पर भी अनुदेशन माध्यम का रूप अधिकांशतः हिंदी होता है, परंतु जब यही विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश करते हैं जहां समस्त शिक्षा अंग्रेजी भाषा में हो रही होती है। उस स्थिति में विद्यार्थियों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उपर्युक्त घटनाआ से हम शिक्षा में अनुदेशन माध्यम की महत्ता और उसके चुनाव की गंभीरता को समझ सकते हैं। हममें से कई लोग भाषा को संप्रेषण का साधन मानने के इतने आदी हो चुके हैं कि हमें महसूस करने और चीजों से जुड़ने के रूप में भाषा की उपयोगिता को अक्सर भूल जाते हैं। भाषा के इस वृहद रूप को समझना मुख्यतः उन लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, जो विद्यार्थियों के साथ जुड़े हुए हैं। जिसमें शिक्षक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सर्वोपरि हैं। शिक्षक द्वारा इस बात को समझना होगा कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और उनकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। भाषा की महत्ता व उपयोगिता की जाँच के लिए शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया कि उन्हें अनुदेशन माध्यम की भाषा को समझने में किस प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। विद्यार्थियों द्वारा बतायी गयी मुख्य समस्याएं निम्नलिखित है –

- **हिंदी माध्यम क विद्यार्थियों को अधिक समस्या -** साक्षात्कार के माध्यम यह पता चला कि उन विद्यार्थियों को अधिक समस्या हो रही हैय जिन्होंने अपनी विद्यालयी शिक्षा हिंदी माध्यम में प्राप्त की। विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान शिक्षक द्वारा अंग्रेजी भाषा में पढ़ाने पर विषय को समझने में बहुत समस्या होती है। एन० पुष्करना (२०१२) ने अपने लेख में बताया कि लगभग ८००० विद्यार्थी माहान्य टेक्निकल विश्वविद्यालय, नोएडा में पढ़ रहे थे। अधिकांश विद्यार्थी प्रथम वर्ष को पास नहीं कर पाए। जांच में यह पता चला कि अधिकांश विद्यार्थियों की एक सामान्य समस्या थी कि वे हिंदी माध्यम से आये थे और विश्वविद्यालय में हिन्दी से अपनी पढ़ाई अंग्रेजी भाषा में करने के कारण उन्हें विषय को समझने व व्यक्त करने में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा जिसके परिणाम स्वरुप वह परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पा रहे थे ।
- **संप्रत्यय समझने में समस्या -** शिक्षक द्वारा प्रयुक्त अनुदेशन माध्यम से उत्तपन्न समस्याओ में अधिकांश विद्यार्थियों की सबसे मूलभूत समस्या थीय संप्रत्यय के अधिकांश भाग को ना समझ पाना और जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी परीक्षा फल पर भी दिखाई पड़ता।
- **विषय के प्रति रुचि कम होना -** अधिकांश विद्यार्थियों का यह कहना था कि शिक्षक द्वारा मेरी समझ के प्रतिकूल भाषा में संप्रत्यय पढ़ाने पर मेरी उपयुक्त विषय में रूचि

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

धीरे–धीरे कम होने लगती है तथा रुचि में कमी आने के कारण उस विषय में एकाग्रता भी कम हो जाती है।

- **ड्रॉपआउट** - मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों का यह कहना था कि शिक्षक द्वारा संप्रत्यय को पढ़ाने के लिए प्रयुक्त भाषा समझ नहीं आने पर मुझे विश्वविद्यालय छोड़ देने की इच्छा भी होती है। अध्ययनों में भी यह पाया गया है कि आदिवासी बच्चों का शैक्षणिक संस्थाओं से ड्रॉपआउट होने का एक प्रमुख कारण अनुदेशन माध्यम की भाषा का समझ ना आना था। आदिवासी विद्यार्थी, शिक्षक की भाषा समझ नहीं पाते और शिक्षक भी आदिवासी विद्यार्थियों की क्षेत्री भाषा में शिक्षण कार्य करने में अपने को असमर्थ महसूस करते ।

- **आत्मविश्वास की कमी** - शिक्षक द्वारा संप्रत्यय पढ़ाने के लिए प्रयुक्त भाषा समझ नहीं आने पर मुझे कक्षा में शिक्षक से संप्रत्यय संबंधी समस्या पूछने तथा शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछने पर उसका उत्तर देने व अपनी बात कक्षा में रखने में समस्या उत्पन्न होती है। मुझे अपने भीतर आत्मविश्वास में कमी महसूस होती है। हुसैन एवं अन्य विद्वान (२०१०) तथा सरकार एवं अन्य विद्वान (२०१५) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि विद्यालय में स्थानीय भाषा से अचानक स्नातक प्रथम वर्ष में अनुदेशन माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होने से विद्यार्थियों को तनाव, चिंता और कई प्रकार के शैक्षणिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

- **अनुत्तीर्ण होने का भय** - मुख्यतः हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों का यह कहना था कि शिक्षक द्वारा कक्षा में विषय को अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा में पढ़ाने व लिखाने के कारण मुझे संप्रत्यय को समझने में समस्या उत्पन्न होती है, जिसके कारण मुझे उपयुक्त विषय में अनुत्तीर्ण होने का भय सताता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- **पक्षपात की समस्या -** कुछ विद्यार्थियों का यह कहना था कि अंग्रेजी में पढ़ाने वाले कुछ शिक्षक कक्षा में अंग्रेजी भाषा में प्रश्नों का उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की अधिक प्रशंसा करते और असाइनमेंट व परीक्षा में अंग्रेजी में उत्तर लिखने पर अधिक अंक देते है।
- **सीखने संबंधी समस्या** कृ हिंदी व अंग्रेजी दोनों माध्यम के विद्यार्थियों की समस्या थी कि जब उन्हें अनुदेशन माध्यम को समझने में समस्या होती है तो उनके सीखने, समझने, लिखने आदि की गति भी धीमी पड़ने लगती है। जिसका प्रभाव उनकी परीक्षाफल पर भी पड़ता है।
- **सहपाठियों का पक्षपात** कृ ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के कुछ विद्यार्थियों का यह कहना था कि शिक्षक द्वारा अंग्रेजी भाषा में पढ़ाने पर अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी उसे आसानी से समझ लेते हैं परंतु ऐसे सहपाठियों से संप्रत्यय समझने के लिए सहायता मांगने पर अधिकांश सहपाठियों द्वारा कोई सहायता नहीं मिलती ।
- **नोट्स की समस्या** कृ हिंदी व अंग्रेजी दोनों माध्यम के विद्यार्थियों की यह समस्या थी कि शिक्षक द्वारा संप्रत्यय को अंग्रेजी में पढ़ाने पर हिंदी माध्यम के विद्यार्थिया को उसे लिखने (दवजम कवूद) में समस्या होती है। इसके विपरीत अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के साथ भी समान समस्या थी। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की मांग के अनुसार उन्हें अलग से हिंदी या अंग्रेजी में नोट्स उपलब्ध नहीं कराया जाता। शिक्षक अपने को जिस भाषा में पढ़ाने में सहज महसूस करते वह उसी भाषा में पढ़ाते व नोट्स उपलब्ध कराते ।

हम देख सकते हैं कि विद्यार्थी के अध्ययन काल के दौरान अनुदेशन माध्यम की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है, और जब अनुदेशन माध्यम की भूमिका को विश्वविद्यालय व शिक्षक द्वारा अधिक महत्व नहीं दिया जाता तब विद्यार्थी किस प्रकार की भिन्न–भिन्न शैक्षणिक, सामाजिक, भावात्मक आदि समस्याओं से गुजरते हैं। अतः हमें इसकी गंभीरता को देखते हुए इस समस्या के समाधान पर विचार करने की आवश्यकता है तथा समाधान के स्तर पर हमें आधार से शुरुआत करना होगा जो निम्नलिखित है –

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- **परिवार के स्तर पर -** परिवार ही वह स्थान हैय जहाँ बालक का सबसे पहले भाषा के ज्ञान से साक्षात्कार होता है। अभिभावक अपने बच्चों की परवरिश इस प्रकार से करें कि वह सभी भाषाओं को एक समान दृष्टि से देखें तथा किसी विशेष भाषा (अँग्रेजी) के ज्ञान के आधार पर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को ना आके। माता–पिता का यह दायित्व है कि वह अपने बच्चों को एक से अधिक भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। साथ ही अपनी मातृभाषा के प्रति आदर व सम्मान का भाव रखें।

- **विद्यालय स्तर पर -** विद्यालय में विद्यार्थियों को भाषा संबंधी विषय जैसे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि विषयों को केवल एक विषय के रूप में ना पढ़ा कर भिन्न–भिन्न भाषाओं की महत्ता को बताना व उस भाषा में विद्यार्थियों को पढ़ना, लिखना, समझना, बोलना आदि कौशलों में दक्ष बनाना होगा। शिक्षकों को विद्यालय में अंग्रेजी विषय को केवल प्रश्न उत्तर याद करने तक ही सीमित न रखकर अंग्रेजी भाषा की भविष्य में आवश्यकता व उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान देना चाहिए तथा साथ ही अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान व आदर भी सिखाना चाहिए।

- **विश्वविद्यालयी स्तर पर -** एक विश्वविद्यालय में कई संस्थाएं व संकाय होते है। जिसके भीतर कई विभाग होते हैं। यदि सभी विभागों के विभागाध्यक्ष व शिक्षक ऐसे आयोजन भी कराये जहां वह विद्यार्थियों की समस्याओं को सुनें और उन समस्याओं के समाधान को खाज कर उसे दूर करने का प्रयास करें। विश्वविद्यालय स्तर पर अनुदेशन माध्यम भी विद्यार्थियों की एक प्रमुख समस्या के रूप में है जिसे दूर करने के लिए विभागों द्वारा कुछ प्रमुख कार्य किए जा सकते हैं। जैस - अलग से मातृभाषा में पढ़ाने वाले शिक्षक की व्यवस्था करना, हिंदी में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की कक्षाएं अलग–अलग लेना, पुस्तकालय में हिंदी व अंग्रेजी की अच्छी पुस्तकों की व्यवस्था करना इत्यादि।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- **शिक्षक के स्तर पर -** समस्त शिक्षण कार्य की तीन मौलिक स्तंभ होते हैं। शिक्षक, पाठ्यक्रम और विद्यार्थी। कक्षा में शिक्षक संप्रेषण के द्वारा अर्थात किसी भाषा का प्रयोग करके अपने ज्ञान को विद्यार्थियों तक संप्रेषित करता है। शिक्षक को हमेशा इस बात पर सजग रहना चाहिए कि वह विषय को पढ़ाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग कर रहे है, क्या वह भाषा बच्चों को समझ आ रही है? शिक्षक को हमेशा छात्र केंद्रित भाषा का प्रयोग करना चाहिए और यदि विद्यार्थी द्विभाषी होकर पढ़ाने की मांग करते हैं तो शिक्षक को उनके अनुसार ही पढ़ाना चाहिए ना कि अपनी सहजतानुसार।
- **नीतियों के स्तर पर -** उच्च शिक्षण संस्थाओं के लिए नीतियां बनाते समय उन सभी समस्याओं पर गौर करने की आवश्यकता है जिससे उच्च शिक्षण संस्थाओं में पढ़ रहे विद्यार्थी जूझ रहे हैं। उच्च शिक्षण संस्थाओं में अधिकांश विद्यार्थियों के लिए अनुदेशन माध्यम एक जटिल समस्या है। ऐसी स्थिति में उच्च शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों के चयन के दौरान एक मानदंड यह भी स्थापित किया जाए कि शिक्षक के तौर पर कवल उन्ही का चयन हो जिन्हें प्रथम अर्थात मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा (अंग्रेजी) दोनों पर अधिकार हो। साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा एक एसे विभाग का निर्माण कराया जाए, जहां विश्व की प्रसिद्ध व वैध पुस्तकों को भारत की मातृभाषाओ में अनुवाद किया जाए, जिससे वह ज्ञान भारत के हर एक विद्यार्थी तक पहुंच सके।

अतः प्रस्तुत लेख इस ओर इंगित नहीं करना चाहता है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं में समस्त शिक्षण कार्य अंग्रेजी माध्यम में न होकर हिंदी में हो। यह सिद्ध भी हो चुका है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से विषयवस्तु को सीखना समझना आसान व रुचिपूर्ण होता है। परंतु भारत जैसे बहुभाषी देश में लगभग प्रत्येक राज्य की अपनी मातृभाषा है। इसलिए शिक्षा में अनुदेशन भाषा का चुनाव करते समय शिक्षक इस बात का ध्यान रखे कि वह जिस भी भाषा में शिक्षण कार्य करें वह विद्यार्थियों की मांग या अपेक्षाओं पर खरा उतरे। जिससे विद्यार्थियों को भाषा के स्तर पर किसी भी प्रकार की समस्या का सामना ना

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

करना पड़े और भविष्य में कभी भी कोई विद्यार्थी आत्महत्या जैसा दुःखदायी कदम ना उठाएं। शिक्षक इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि वह समस्त शिक्षण कार्य निरर्थक हो जाएगा, यदि वह ज्ञान विद्यार्थी तक नहीं पहुंच पाए। इसलिए अनुदेशन माध्यम एक गंभीर और महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिस पर विचार करना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

मणिमाला(२०१४).अंग्रेजी की गुलामी,अंतिम जन.अंक ६ पृष्ठ संख्या १–१०

मुधोवोजी ,पी०(२०१२). सोशल एण्ड एकडेमीक अजस्ट्मन्ट ऑफ फर्स्ट ईयर यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स . जर्नल ऑफ सोशल साइंस ३३ (२), पृष्ठ संख्या,२५१–२५६

नायडू,एम०वी०(२०१७).शिक्षा को बेहतर बनाएगी मातृभाषा. दैनिक जागरण .१८ अक्टूबर पृष्ठ संख्या १२

सानु,संक्रांत (२०१८).उन्नति का मूल नहीं अंग्रेजी भाषा.दैनिक जागरण.11अप्रैल पृष्ठ संख्या १२

द न्यूइंडियन एक्स्प्रेस (2019).अनेबल टू फॉलो इंग्लिश लैंग्वेज स्टूडेंट्स कमीट सोसाइड इन त्रिची.द न्यू इंडियन एक्स्प्रेस

https:www.newIndianexpress.com/states/tamil-nadu/2019/nov/14/unable-to-follow-English-language-students commit-suicide-in-trichy-2061466

अपूर्वानन्द (2014).भाषा विवादः एक धोके से दूसरे धोके की कहानी.बीबीसी हिन्दी न्यूज. 30नवम्बर

https;//www.bbc.com/hindi/india/2014/11/14112 9_sanskrit_german_english_rns

टाइम्स न्यूज नेटवर्क(2019).ग्लोबल रैंकिंग.नवभारत टाइम्स 12सितंबर 2019.

https://navbharattimes.indiatimes.com/education/education-news/indian-universities-out-of-top-300-in-global-rankings/articalshow/71090418

https://en.m.wikipedia.org

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language